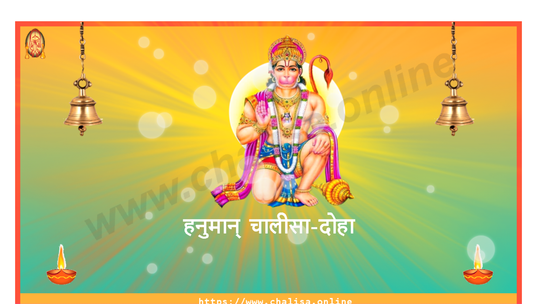

हनुमान् चालीसा-दोहा

https://www.chalisa.online

|| हनुमान् चालीसा ||

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज निजमन मुकुर सुधारि ।
वरणौ रघुवर विमलयश जो दायक फलचारि ॥
बुद्धिहीन तनुजानिके सुमिरौ पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि हरहु कलेश विकार ॥

ध्यानम्

गोष्पदीकृत वाराशिं मशकीकृत राक्षसम् ।
रामायण महामाला रत्नं वंदे-(अ)निलात्मजम् ॥
यत्र यत्र रघुनाथ कीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकांजलिम् ।
भाष्पवारि परिपूर्ण लोचनं मारुतिं नमत राक्षसांतकम् ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर ।
जय कपीश तिहु लोक उजागर ॥ 1 ॥
रामदूत अतुलित बलधामा ।
अंजनि पुत्र पवनसुत नामा ॥ 2 ॥
महावीर विक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ॥3 ॥
कंचन वरण विराज सुवेशा ।
कानन कुंडल कुंचित केशा ॥ 4 ॥
हाथवज्र औ ध्वजा विराजै ।
कांधे मूंज जनेवू साजै ॥ 5॥
शंकर सुवन केसरी नंदन ।
तेज प्रताप महाजग वंदन ॥ 6 ॥
विद्यावान गुणी अति चातुर ।
राम काज करिवे को आतुर ॥ 7 ॥
प्रभु चरित्र सुनिवे को रसिया ।
रामलखन सीता मन बसिया ॥ 8॥
सूक्ष्म रूपधरि सियहि दिखावा ।
विकट रूपधरि लंक जलावा ॥ 9 ॥
भीम रूपधरि असुर संहारे ।
रामचंद्र के काज संवारे ॥ 10 ॥
लाय संजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुवीर हरषि उरलाये ॥ 11 ॥
रघुपति कीन्ही बहुत बडायी ।
तुम मम प्रिय भरत सम भायी ॥ 12 ॥
सहस्र वदन तुम्हरो यशगावै ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावै ॥ 13 ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीशा ।
नारद शारद सहित अहीशा ॥ 14 ॥
यम कुबेर दिगपाल जहां ते ।
कवि कोविद कहि सके कहां ते ॥ 15 ॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा ।
राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥ 16 ॥
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना ।
लंकेश्वर भये सब जग जाना ॥ 17 ॥
युग सहस्र योजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ 18 ॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही ।
जलधि लांघि गये अचरज नाही ॥ 19 ॥
दुर्गम काज जगत के जेते ।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥ 20 ॥
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ 21 ॥
सब सुख लहै तुम्हारी शरणा ।
तुम रक्षक काहू को डर ना ॥ 22 ॥
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हांक ते कांपै ॥ 23 ॥
भूत पिशाच निकट नहि आवै ।
महवीर जब नाम सुनावै ॥ 24 ॥
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत वीरा ॥ 25 ॥
संकट से हनुमान छुडावै ।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै ॥ 26 ॥
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिनके काज सकल तुम साजा ॥ 27 ॥
और मनोरथ जो कोयि लावै ।
तासु अमित जीवन फल पावै ॥ 28 ॥
चारो युग प्रताप तुम्हारा ।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा ॥ 29 ॥
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ॥ 30 ॥
अष्टसिद्धि नव निधि के दाता ।
अस वर दीन्ह जानकी माता ॥ 31 ॥
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ 32 ॥
तुम्हरे भजन रामको पावै ।
जन्म जन्म के दुख बिसरावै ॥ 33 ॥
अंत काल रघुपति पुरजायी ।
जहां जन्म हरिभक्त कहायी ॥ 34 ॥
और देवता चित्त न धरयी ।
हनुमत सेयि सर्व सुख करयी ॥ 35 ॥
संकट क(ह)टै मिटै सब पीरा ।
जो सुमिरै हनुमत बल वीरा ॥ 36 ॥
जै जै जै हनुमान गोसायी ।
कृपा करहु गुरुदेव की नायी ॥ 37 ॥
जो शत वार पाठ कर कोयी ।
छूटहि बंदि महा सुख होयी ॥ 38 ॥
जो यह पडै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि साखी गौरीशा ॥ 39 ॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय मह डेरा ॥ 40 ॥

दोहा

पवन तनय संकट हरण - मंगल मूरति रूप् ।
राम लखन सीता सहित - हृदय बसहु सुरभूप् ॥
सियावर रामचंद्रकी जय । पवनसुत हनुमानकी जय । बोलो भायी सब संतनकी जय ।